Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

रांची विश्वविद्यालय में संचालित सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षा विभाग के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक शोध

Dr. Rakesh Kumar David*

Assistant Professor

सार - ***विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देश में भारत के विश्वविद्यालय उच्चतर कक्षाओं में से मेस्टर शिक्षा प्रणाली लागू कर रहे हैं। यह शोध प्रतिदर्श के तौर पर रांची विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के शिक्षकों एवं छात्रों की अभिवृति का तुलनात्मक शोध प्रस्तुत करता है।***

----------X----------

विषय संकेतः-

सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली, अभिवृति का तुलनात्मक शोध शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, शिक्षण प्रणाली एवं मूल्यांकन आदि का विशेष महत्व है। मूल्यांकन किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अन्तिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है, उपयुक्त मूल्यांकन के अभाव में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता, उपयुक्तता एवं आवश्यकता का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी कारण समय समय पर मूल्यांकन एवं इससे जुड़ी अन्य कड़ियों में यथोचित सुधार कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जाता रहा है फिर चाहे वह प्रश्नपत्रों के प्रारूप में परिवर्तन हो या फिर परीक्षण प्रणाली में।

प्रस्तुत शोध में रांची विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा स्नातक स्तर पर हाल ही में आरोपित सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक शोध किया गया है जिसमें शिक्षा स्नातक स्तर पर पढ़ने-पढ़ाने वाले 50 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों के न्यादर्श पर स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। शिक्षा व्यक्ति के जन्म से आरम्भ होकर उसकी मृत्यु तक अनवरत् चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्शों, अभीष्ट आशाओं , सनातन् मूल्यों'-विश्वासों तथा प्राचीन परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहर को हस्तान्तरित करता है। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का एक उद्देश्य धन अर्जन करना भी है। आज के परिदृश्य में व्यक्ति की आकांक्षा और उद्देश्य उसकी शिक्षा की दशा और दिशा को निर्धारित करती है। जनसंख्या वृद्धि के साथ जहाँ एक ओर बेरोजगारी बढ़ी है। वहीं urvival of the fittestdk सिद्धान्त भी प्रतिस्पर्धा के इस दौर को परिभाषित कर रहा है। लगातार जनसंख्या वृद्धि एवं विशाल जन समूह में सीमित अवसरों के कारण प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक है ऐसी स्थिति में शिक्षा की गुणवक्ता को सुनिश्चित करना अनिवार्य है।

शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षण प्रणाली, मूल्यांकन आदि सभी पक्ष महत्वपूर्ण हैं। इनमें से किसी एक पक्ष में कमी रहने से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहती है। वर्तमान समय की वार्षिक परीक्षा प्रणाली इस बदलते दौर की शिक्षा के उद्देश्य को पूरी तरह से पूर्ण करती नहीं दिखती है। वर्ष भर छात्रा सुचारू रूप से कक्षाओं में नहीं आते। शिक्षार्थी जो वर्ष भर कक्षा में ही नहीं आता उसे शिक्षा के उद्देश्य और प्रभाव की जानकारी कैसे होगी?जब शिक्षा को शिक्षा के दृष्टिकोण से न देखकर उसे सिर्फ डिग्री मात्रा के रूप में देखा जायेगा और उस डिग्री को प्राप्त करने के लिए येन-केन-प्रकारेण का भाव होगा तो यह भी आसानी से समझा जा सकता है कि उस शिक्षा से व्यक्तिगत्, सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्य कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में कुछ ऐसे प्रयासों की आवश्यकता समझी जाती रही है जिससे शिक्षण-अधिगम् प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार किया जा सके।

www.ignited.in

सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली को वार्षिक परीक्षा प्रणाली पर एक सुधार के रूप में देखा जा सकता है। जिसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे भागों में बांटकर शिक्षण अधिगम् प्रक्रिया को सम्पादित किया जाता है। इससे शिक्षक एवं छात्रा दोनों वर्ष भर क्रियाशील रहते हुये पाठ्यक्रम का व्यापक एवं गहन पठन-पाठन करते हैं।

कुछ विश्वविद्यालय में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली लागू है तथा कुछ में लागू होना शेष है। इस क्रम में रांची विश्वविद्यालय द्वारा यह प्रणाली हाल ही में लागू की गयी है तथा सबसे पहले इसे शिक्षा विभाग पर लागू किया गया है।

अतः ऐसी स्थिति में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली को शिक्षार्थी एवं अध्यापक किस दृष्टिकोण से देख, समझ और अनुभव कर रहे हैं, प्रस्तुत शोध इसी पर आधारित है। क्या वास्तव में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली वार्षिक शिक्षा प्रणाली पर एक सुधार साबित हो सकेगा, यह ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत शोध भी एक सहायक कड़ी सिद्ध हो सकता है।

अतः प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है- "सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक शोध"

सम्बन्धित अध्ययन का सर्वेक्षण- हलधर, पंकज (2011) ने "महाविद्यालयों में स्नातक व परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन" किया तथा इनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक पाया।

हुसैन, हबीबा ने छात्रों के मूल्यांकन में सुधार पर कार्य किया तथा पाया कि 90 प्रतिशत शिक्षकों ने छात्रों के अधिक अच्छे निष्पादन के लिए वार्षिक मूल्यांकन की अपेक्षा सेमेस्टर पद्धति का पक्ष लिया, जिसके कारण है- छात्रों द्वारा अधिक अच्छी तरह से अधिगम करना, छात्रों के अधिगम का सतत् मूल्यांकन, शिक्षकों द्वारा अधिक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन, हर छात्रा का व्यक्तिगत मूल्यांकन, अधिक उत्तरदायी अधिगमकर्ताओं का निर्माण तथा छात्रों द्वारा अधिक अच्छे अंकों का प्राप्त करना।

सिंह, अमिता 1998 ने वार्षिक परीक्षा पद्धति और सेमेस्टर परीक्षा पर तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि 80 प्रतिशत शिक्षक व छात्रों ने वार्षिक पद्धति के स्थान पर सेमेस्टर पद्धति को लागू करने की प्राथमिकता दी।

अख्तर, पी0 आर0 1980 ने भारत के कुछ चुनिन्दा विश्वविद्यालयों में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया तथा पाया कि- विश्वविद्यालय के प्राधिकारी विशेषज्ञों की सहायता से सेमेस्टर प्रणाली लागू करने की पहल कर रहे थे, शिक्षकों के विचारों में-पाठ्यक्रम एवं व्यवस्थापन में लोच और स्वतन्त्रता उनके लिए आनन्दकारी होगी, अधिकतर शिक्षकों एवं छात्रों के विचारों में छात्रों ने सेमेस्टर पद्धति को प्राथमिकता दी क्योंकि ये कार्यभार को बांट देती है और इसमें सतत् मूल्यांकन के कारण छात्र अपना ग्रेड भी सुधार सकते हैं।

अतः उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर तब जब कि सेमेस्टर प्रणाली लागू हो चुकी है, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना अपेक्षित हो जाता है। अतः वर्तमान अध्ययन इस शोध श्रंखला की अगली कड़ी के क्रम में है जिसके उद्देश्य हैं-

1. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का शोध।
2. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का शोध।
3. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयो में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक शोध।

शोध की परिकल्पना-

1. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।
2. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।
3. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि के द्वारा किया गया।

www.ignited.in

शोध की जनसंख्या - रांची विश्वविद्यालय के शिक्षा महाविद्यालयों में पढ़ने एवं पढ़ाने वाले समस्त शिक्षार्थी एवं शिक्षक प्रस्तु त शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्शन विधि एवं न्यादर्श - प्रस्तुत शोध में रांची विश्वविद्यालय के शिक्षा महाविद्यालयों में से लॉटरी विधि द्वारा कुल चार महाविद्यालय चुने गये जिसमें से गुच्छ प्रतिदर्शन द्वारा 50 शिक्षकों एवं 50 शिक्षार्थियों का न्यादर्श लिया गया है।

उपकरण एवं आंकड़ों का संकलन - लिकर्ट अभिवृत्ति मापनी के आधार पर स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी द्वारा शिक्षा महाविद्यालयों से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति को एकत्रित कर उनके प्राप्तांकों का योग प्राप्त किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी - शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के प्राप्तांकों से अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता (C.R.) आदि सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकणों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जाँच और व्याख्या -

आंकणों का तालिका

क्र०	शोध समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	विश्वास स्तर	निष्कर्ष
1	शिक्षक	50	70.90	12.03	2.36	1.61	0.05	असार्थक
2	शिक्षार्थी	50	67.10	11.55				

परिकल्पना नं0 1. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।

तालिकानुसार शिक्षा स्नातक स्तर पर शिक्षकों का मध्यमान 70.90 है अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा स्नातक स्तर के शिक्षकों में सेमेस्टर शिक्षा के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना नं0 2. रांची नगर स्थित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक है।

निष्कर्ष

तालिकानुसार शिक्षा स्नातक स्तर पर शिक्षार्थियों का मध्यमान 67.10 है अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा स्नातक स्तर के शिक्षार्थियों में सेमेस्टर शिक्षा के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

परिकल्पना नं0 3. रांची नगर में स्थित महाविद्यालयों में शिक्षा स्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों और शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका में चूँकि क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का मान 1.61 है, जो 0.05 विश्वास स्तर के मान 1.96 से कम है अतः दोनों के मध्यमानों के बीच 0.05 विश्वास स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। इस आधार पर हमारी परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली में दो कथन ऐसे हैं जो कि उदासीन कथन हैं जिसके प्रत्येक उत्तर में शून्य अंक दिये गये उन प्रश्नों के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति निम्न है-

कथन - सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए शिक्षकों एवं कालेजों पर ज्यादा आश्रित रहना पड़ता है।

इस कथन के सन्दर्भ में 42 प्रतिशत शिक्षक एवं 58 प्रतिशत शिक्षार्थी असहमत हैं। कथन - सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के लागू होने से विद्यार्थियों के राजनैतिक हिस्सेदारी में कमी आयी है।

इस कथन के बारे में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो ही अनिश्चित मत रखते हैं क्योंकि बीते समय में छात्र राजनीति पर सरकार द्वारा रोक लगाये जाने के कारण स्वाभाविक रूप से छात्रों की राजनैतिक भागेदारी में कमी आयी है।

निष्कर्ष एवं सुझावः-

चूंकि शिक्षा स्तर पर प्रारम्भिक अनुभव के रूप में लागू सेमेस्टर शिक्षण प्रणाली में ऐसा पाया गया कि सेमेस्टर को नियमित रखने में मूल्यांकन प्रक्रिया की देरी के कारण नये सत्र के प्रवेश सही समय से नहीं हो पा रहे हैं। अतः यदि समय से छात्रों के प्रवेश और मूल्यांकन की समस्या को सुलझाया जा सके तो अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि निश्चित ही समेस्टर प्रणाली छात्रों की गुणात्मक शिक्षा में एक सकारात्मक योगदान है, जिसे उद्देश्यपूर्ण प्रश्नपत्रों के माध्यम से और अधिक उपयोगी बनाकर छात्रों का गुणात्मक मूल्यांकन बढ़ाया जा सकता है तथा शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

www.ignited.in

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों की सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान रूप से सकारात्मक है अर्थात शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के द्वारा शैक्षिक प्रगति की अपेक्षा करते हैं क्योंकि इससे दोनों पूरे सत्र सक्रिय रहते हुए पठन-पाठन की क्रिया में संलिप्त रहते हैं, पाठ्यक्रम का बोझ कम हो जाता है तथा छात्रो का मूल्यांकन और अधिक व्यापक, सतत एवं नियोजित हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. अख्तर, पी. आर. (1980), भारत में कुछ चुनिन्दा वि.वि. में सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन, थर्ड सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजूकेशन 1978-83, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली, पेज न. 866।

2. गुप्ता, स.पी. (2004), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पेज नं. 2-5।

3. हलधर, पंकज (2011), महाविद्यालयों में स्नातक व परास्नातक स्तर पर सेमेस्टर शिक्षा प्रणाली के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध।

4. हुसैन, हबीबा (2009), इम्प्रू विंग स्टूडेण्ट्स ईवैल्यूवेशन, क्वालिटी एजूकेशन, ए.पी.एच. पब्लिशिंग काॅरपोरेशन, नई दिल्ली।

5. शील, अवनीन्द्र (2009), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, साहित्य रत्नालय, पेज न. 81।

6. सिंह, अमिता (1998), वार्षिक परीक्षा प्रणाली और सेमेस्टर परीक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध पेज नं. 22-24।

Corresponding Author

Dr. Rakesh Kumar David*

Assistant Professor

www.ignited.in